रजिस्ट्री सं० डी-(डी)-72 REGISTERED No. D-(D)-7

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY
भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1
प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 70] नई दिल्ली, बुधवार, मार्च 31, 1976/चैत्र 11, 1898
No. 70] NEW DELHI, WEDNESDAY, MARCH 31, 1976/CHAITRA 11, 1898

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

NOTIFICATION

New Delhi, the 31st March 1976

No. 3/4/76-Public.—The President has learnt with deep regret of the death at 21.45 hours on 26th March, 1976 of Shri Birendra Narayan Chakravarty, Governor of Haryana.

Born on 20th December, 1904, Shri Chakravarty received his education in Calcutta and London and joined the ICS in 1929. After holding various administrative posts under the Government of undivided Bengal he joined the diplomatic service in 1947 and was Political Adviser to the Supreme Commander, Allied Powers, Tokyo in 1948-49. He worked as Joint Secretary in the Ministry of External Affairs in 1949, Commonwealth Secretary till 1951 and Ambassador to Netherlands from 1952 to 1954. He was also the Senior alternate Chairman Neutral Nations Repatriation Commission in Korea and was the acting High Commissioner in London from 1955 to 1962. Later he was High Commissioner to Ceylon, Special Secretary in the Ministry of External Affairs and High Commissioner to Canada. In 1961 he was appointed India's representative at the 16th Session of the United Nations General Assembly and served as permanent representative to U.N. from 1962 to 1965. He had been the Governor of Haryana since September, 1967.

Shri Birendra Narayan Chakravarty had rendered outstanding services to the country in the fields of diplomacy and administration. He was an inspiring

head of the State under whose guidance for over 8 years Haryana developed rapidly to become one of the leading States. Shri Chakravarty was dedicated to the service of the people of the State and took deep interest in matters connected with their welfare irrespective of caste or creed. He was a man of wide culture, great tact and wisdom, rare social gifts and charm who won the esteem and affection of one and all. In Shri Chakravarty's death, the country has suffered an irreparable loss.

S. L. KHURANA, Secy.

गृह मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 31 मार्च, 1976

सं० 3/4/76-पब्लिक.—राष्ट्रपति को यह समाचार पा कर गहरा दुःख हुआ कि हरियाणा के राज्यपाल श्री बीरेन्द्र नारायण चक्रवर्ती का 26 मार्च, 1976 को 21.45 बजे देहावसान हो गया ।

श्री चक्रवर्ती का जन्म 20 दिसम्बर, 1904 को हुआ और उन्होंने कलकत्ता तथा लन्दन में शिक्षा प्राप्त की और 1929 में भारतीय सिविल सेवा में प्रवेश किया । अविभाजित बंगाल सरकार के अधीन विभिन्न प्रशासनिक पदों पर कार्य करने के बाद, उन्होंने 1947 में राजनयिक सेवा में प्रवेश किया और 1948–49 में वे टोकियो में मित्र राष्ट्र शक्तियों के सुप्रीम कमाण्डर के राजनीतिक सलाहकार रहे । उन्होंने 1949 में विदेश मंत्रालय में संयुक्त सचिव के रूप में कार्य किया तथा 1951 तक वे राष्ट्रमंडलीय सचिव रहे और 1952 से 1954 तक वे नीदरलैण्ड में भारत के राजदूत रहे। वे कोरिया में तटस्थ राष्ट्र प्रत्यावर्तन आयोग के वरिष्ठ वैकल्पिक अध्यक्ष भी रहे और 1955 से 1962 तक लन्दन में कार्यवाहक उच्चायुक्त रहे । बाद में वे श्रीलंका में भारत के उच्चायुक्त, विदेश मंत्रालय में विशेष सचिव और कनाडा में भारत के उच्चायुक्त रहे । 1961 में उन्हें संयुक्त राष्ट्र महासभा के 16वें अधिवेशन में भारत का प्रतिनिधि नियुक्त किया गया और उन्होंने 1962 से 1965 तक संयुक्त राष्ट्र में स्थायी प्रतिनिधि के रूप में कार्य किया । सितम्बर, 1967 से वे हरियाणा के राज्यपाल थे ।

श्री बीरेन्द्र नारायण चक्रवर्ती ने राजनयिक और प्रशासन के क्षेत्र में देश की उत्कृष्ट सेवा की । 8 वर्ष से अधिक समय तक वे हरियाणा राज्य के मार्गदर्शक राज्याध्यक्ष रहे । इनके मार्गदर्शन में हरियाणा ने तेजी से विकास किया और वह एक अग्रणी राज्यों की श्रेणी में आ गया । श्री चक्रवर्ती ने हरियाणा की जनता की निष्ठा से सेवा की तथा जाति और सम्प्रदाय का भेद भाव किए बगैर उनके कल्याण में गहरी अभिरुचि ली । उनका व्यक्तित्व सांस्कृतिक मान्यताओं, महान चातुर्य और विवेकशीलता, अलभ्य सामाजिक गुणों से युक्त और आकर्षक होने के कारण वे सभी के सम्मान और स्नेह के पात्र थे । उनकी मृत्यु से देश की ऐसी क्षति हुई है जिसकी पूर्ति नहीं हो सकती ।

सुन्दर लाल खुराना, सचिव

PRINTED BY THE GENERAL MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, MINTO ROAD, NEW DELHI AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1976